



## कहानी

एक घने जंगल के बीच, जहाँ हवा में पेड़ों की सरसराहट और पक्षियों की चहचहाहट गूँजती थी, एक ऊँचे पहाड़ पर एक पुराना किला खड़ा था। किले के पास एक विशाल बरगद का पेड़ था, जिसकी शाखाओं पर एक उल्लू रहता था, जिसका नाम था घूमा। घूमा हर रात जंगल की घाटी में उड़ान भरता और वहाँ की घासों व झाड़ियों में छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े ढूँढ़कर अपना पेट भरता।

किले से कुछ दूरी पर एक चमकती झील थी, जिसमें कई खूबसूरत हंस तैरते थे। घूमा अक्सर

हो तो थोड़ा मेरे साथ गप्पें भी मार ले! घूमा ने पानी पिया और फिर थोड़ा शरमाते हुए बोला, स्वान जी, आप तो इतने सुंदर और बुद्धिमान लगते हैं। मुझे लगता है, आपसे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

स्वान हँसा और बोला, अरे, तुम भी तो कम नहीं हो! रात में जब सारा जंगल सोता है, तुम्हारी आँखें चमकती हैं। चलो, दोस्ती पक्की! बस, यहाँ से घूमा और स्वान की दोस्ती पक्की हो गई। दोनों हर दिन झील के किनारे मिलते, बातें करते, और एक-दूसरे से जंगल की कहानियाँ साझा करते।



बरगद की डाल पर बैठकर हंसों को देखा करता। उनके दूध जैसे सफेद पंख, लंबी सुंदर गर्दन और चमकती आँखें उसे मंत्रमुग्ध कर देती थीं। काश, मैं भी इन हंसों जैसा सुंदर होता! वह सोचता। और काश, मेरा कोई हंस दोस्त बन जाए!

एक दिन, घूमा ने हिम्मत जुटाई और झील के किनारे एक झाड़ी पर जा बैठा। वहाँ एक हंस, जिसका नाम था स्वान, बड़े शान से तैर रहा था। घूमा ने हल्के से खॉसा और बोला, हंस जी, नमस्ते! क्या मैं इस झील का पानी पी सकता हूँ? बड़ी ध्यास लगी है!

स्वान ने मुरकुराकर कहा, अरे, भाई घूमा! पानी तो सबके लिए है। पी लो, और अगर मन

एक दिन, स्वान ने घूमा को बताया, दोस्त, मैं कोई साधारण हंस नहीं, मैं इस झील के हंसों का राजा हूँ, मेरा नाम स्वानराज है!

घूमा की आँखें चमक उठीं। वाह, स्वानराज! तुम तो सचमुच राजा हो! उसने कहा, स्वानराज ने उसे अपने महल में बुलाया। वहाँ कमल के फूलों की मिठाइयाँ, ताजे फल, और मोतियों की सजावट थी। घूमा तो दंग रह गया। इतना शाही टाट! वह बुदबुदाया।

हर दिन स्वानराज घूमा को अपने महल में बुलाता, और दोनों शाही दावतों का लुक उठाते। लेकिन घूमा के मन में एक डर बैठ गया। कहीं स्वानराज को पता चल गया कि मैं एक साधारण

उल्लू हूँ, तो वो मेरी दोस्ती तोड़ न दे! उसने सोचा। इस डर से घूमा ने एक दिन झूठ बोल दिया। स्वानराज, तुम्हें तो पता ही नहीं, मैं भी कोई साधारण उल्लू नहीं हूँ। मैं उल्लूओं का राजा हूँ, मेरा नाम घूमराज है!

स्वानराज ने हैरानी से कहा, अरे वाह, घूमराज! ये तो कमाल की बात है! फिर तो तुम्हें भी मुझे अपने महल में बुलाना चाहिए! घूमा थोड़ा घबराया, लेकिन उसने हिम्मत जुटाई और बोला, बिल्कुल, दोस्त! कल ही मेरे किले में आना। मैं तुम्हारा शाही स्वागत करूँगा!

घूमा ने किले की गतिविधियों को गौर से देखा था, वह जानता था कि हर दिन सूर्यास्त के समय सैनिक परेड करते हैं और बिगुल बजाते हैं।

फूल इकट्ठा किए और स्वानराज को खिलाए, स्वानराज ने खुशी-खुशी खाया और बोला, घूमराज, तुम्हारी मेहमाननवाजी लाजवाब है! लेकिन अगले दिन कुछ अनहोनी हो गई। सैनिकों को किले से कूच करने का आदेश मिला था। वे अपना सामान समेटकर जाने लगे। स्वानराज ने हैरानी से कहा, घूमराज, ये क्या? तुम्हारी सेना तो बिना तुम्हारी आज्ञा के जा रही है! घूमा घबराया। उसने जल्दी से कहा, अरे, ये जरूर कोई गलतफहमी है! रुको, मैं अभी उन्हें रोकता हूँ! वह जोर-जोर से हूँ-हूँ करने लगा।

सैनिकों ने उसकी आवाज सुनी और उसे अपशकुन समझ लिया। ये उल्लू फिर से घुघुआ रहा है! एक सैनिक ने चिल्लाया। लगता है, कोई

## झूठी शान का सबक

उसने सोचा, बस, यही मौका है अपनी शान दिखाने का!

अगले दिन, घूमा स्वानराज को लेकर बरगद के पेड़ पर पहुँचा। ठीक उसी समय सैनिकों की परेड शुरू हुई। बिगुल की आवाज गूँजी, और सैनिकों ने झंडे को सलामी दी।

घूमा ने रौब से कहा, देखो, स्वानराज! मेरे सैनिक तुम्हारे स्वागत में बिगुल बजा रहे हैं। ये परेड तुम्हारे सम्मान में है! स्वानराज बहुत प्रभावित हुआ। वाह, घूमराज! तुम तो सचमुच एक महान राजा हो! इतनी शानदार सेना! उसने तारीफ की। घूमा ने और जोश में आकर कहा, मैंने आदेश दिया है कि जब तक तुम मेरे महलमन हो, रोज़ ऐसी परेड होगी! उसे पता था कि ये सैनिकों का रोज़ का नियम है, और उसका कोई लेना-देना नहीं।

उस दिन घूमा ने जंगल से फल, मेवे, और

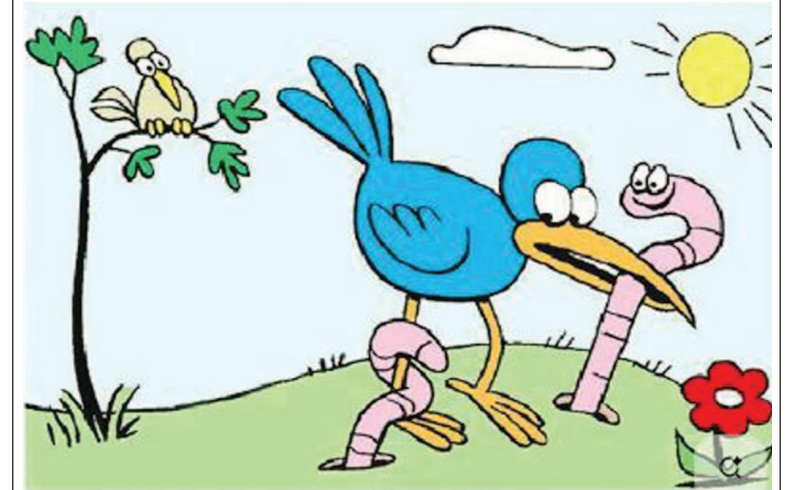
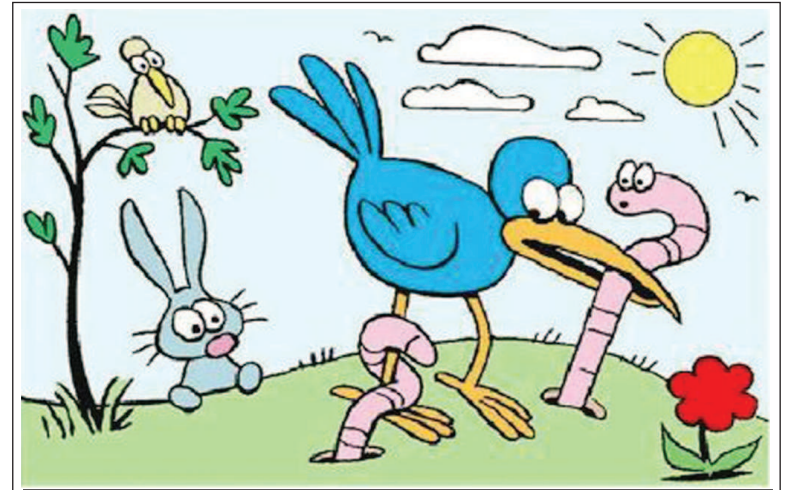
अनहोनी होने वाली है! सैनिकों का सरदार गुस्से में बोला, इस मनहूस उल्लू को सबक सिखाओ! एक सैनिक ने तीर उठाया और निशाना साधा, लेकिन तीर गलती से घूमा की बगल में बैठे स्वानराज को जा लगा। स्वानराज तड़पकर नीचे गिर पड़ा और उसकी साँसें थम गईं।

घूमा सदमे में था, वह स्वानराज की लाश के पास बैठकर विलाप करने लगा, हाय! मेरी झूठी शान ने मेरे सबसे प्यारे दोस्त की जान ले ली! मैंने ये क्या कर दिया! उसी समय, एक भूखा सियार वहाँ से गुज़र रहा था। उसने घूमा को उदास और कमजोर देखा और मौक़े का फायदा उठाकर उस पर झपट पड़ा। घूमा भी मारा गया।

जंगल में ये कहानी फैल गई। जानवरों ने इसे एक सबक की तरह याद रखा कि झूठी शान कभी नहीं दिखानी चाहिए, वरना उसका अंजाम बहुत बुरा हो सकता है।

## अंतर ढूँढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूँढ़कर निकालें।



1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

## कविता

### हमारी रेल



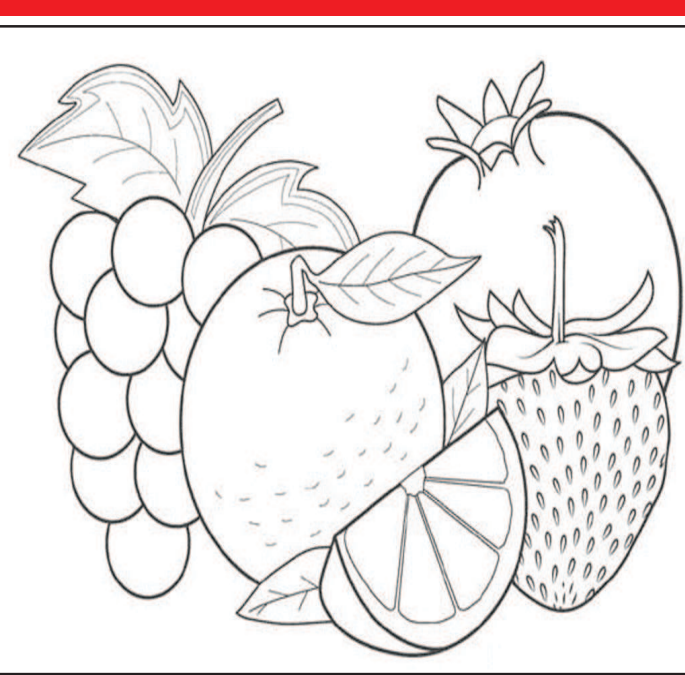
आओ बच्चों, प्यारे बच्चों,  
मिलकर खेलें हम इक खेल.

जो तोड़ेगा खेल की रेल,  
उसको जाना होगा जेल.

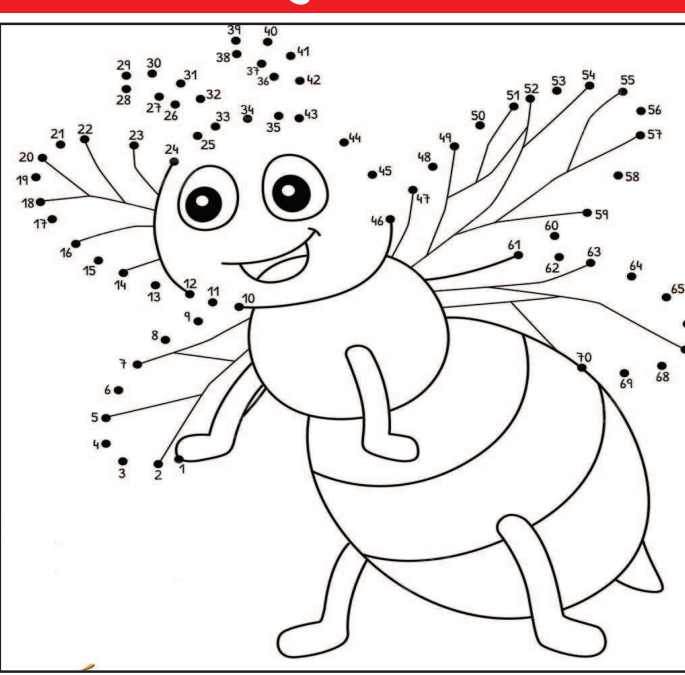
आगे-पीछे जुड़कर बच्चों,  
चलो बना लें लंबी रेल.

अगर प्यार से खेलें हम सब,  
बढ़ता है बच्चों में मेल.

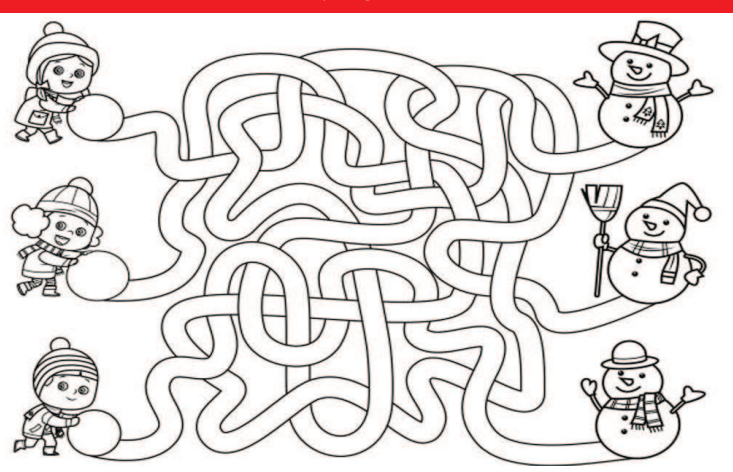
## रंग भरो



## बिंदु मिलाओ



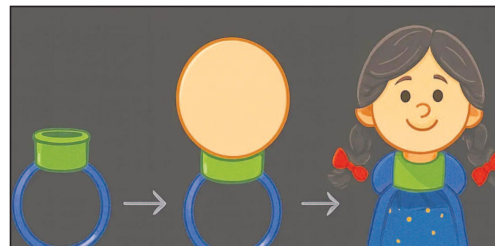
## भूल भुलैया



## आर्ट एंड क्रॉफ्ट

### तौलिया टांगने वाला रिंग

क्या आप अपने बाथरूम को एक पर्सनलाइज्ड और रचनात्मक लुक देना चाहते हैं? या फिर बच्चों के कमरे के लिए कोई प्यारा हैंडिंग डेकोरेशन बनाना चाहते हैं? तो यह छद्म प्रोजेक्ट आपके लिए ही है! हम आपके लिए लाए हैं एक मजेदार और किफायती तरीका, जिससे आप बेकार पड़ी चीजों जैसे कार्डबोर्ड और कपड़े का इस्तेमाल करके एक सुंदर और आकर्षक तौलिया टांगने वाला रिंग बना सकते हैं।



कपड़ा (18 इंच x 18 इंच), कार्डबोर्ड, सुई और धागा, एक प्लास्टिक का रिंग, रुई या फोम, ऊन, स्केच कलर, फेब्रिक पेंट, गोंद।  
विधि- कपड़े के किनारों को सुई धागे से सी लें। सिर्फ हुए हिस्से को बाहर की तरफ रखें, धागे को सिलने के बाद गाँठ न लगाएँ, अब कार्डबोर्ड को गोल आकार में काट लें। इसके ऊपर फोम लगा दें। अब कपड़े के बीच में कार्डबोर्ड लगाएँ, जहाँ फोम वाले हिस्से को नीचे की तरफ रखें। बचे हुए कपड़े को

कार्डबोर्ड के पीछे जोड़ दें और ध्यान दें कि आपके आगे का हिस्सा प्लेन रहे। अब कपड़े को चार इंच चौड़ी, 12 इंच लंबी स्ट्रिप काट लें। आप किसी भी कपड़े का इस्तेमाल कर सकते हैं, अब इस स्ट्रिप को रिंग से पास करें और इस कपड़े को कार्डबोर्ड के पिछले हिस्से के साथ सिल दें। आप इस पर गुड़िया की शकल बनाकर सजा सकते हैं। उन के इस्तेमाल से आप गुड़िया के बाल बना सकते हैं। आपका तौलिया टांगने वाला रिंग तैयार है।

## जानवरों के रोचक तथ्य

नींद और आराम के अंशों खंड- जानवर भी हमारी तरह सोते हैं, लेकिन उनके सोने का तरीका इतना अजीब है कि आपको यकीन नहीं होगा।

डॉल्फिन- एक आँख खुली, एक आँख बंद- क्या आप जानते हैं कि डॉल्फिन जब सोते हैं, तो वह सिर्फ एक आँख बंद करके ही सोती है? इसका कारण यह है कि डॉल्फिन को हर समय थोड़ा जागरूक रहना पड़ता है। उन्हें साँस लेने के लिए सतह पर आना होता है और साथ ही शार्क जैसे शिकारियों से भी खुद को बचाना होता है। इसलिए उनका आधा दिमाग सोता है और आधा दिमाग जागता रहता है। यह एक अद्भुत जैविक प्रक्रिया है जिसे यूनिहेमिस्फेरिक स्लो-वैव स्लीप कहा जाता है।

घोंघा- तीन साल की लंबी नींद- अगर आप सोचते हैं कि आप आलसी हैं, तो घोंघे के बारे में सोचिए! एक घोंघा खराब मौसम या भोजन की कमी होने पर तीन साल तक सो सकता है। वह इस दौरान अपने खोल के अंदर खुद को सील कर लेता है और एक तरह के कोमा में चला जाता है।

समुद्री ऊदबिलाव का हाथ पकड़ना- समुद्री ऊदबिलाव सोते समय एक-दूसरे का हाथ पकड़कर सोते हैं, ताकि वे पानी की लहरों में बहकर अलग न हो जाएँ। यह उनकी दोस्ती और सुरक्षा की एक प्यारी निशानी है।

प्रकृति का गणित- जब रदस्त क्षमताएँ प्रकृति ने कुछ जीवों को ऐसी क्षमताएँ दी हैं, जिन्हें देखकर लगता है कि मानो उनके पास कोई सुपरपावर हो! मधुमक्खी का अथक परिश्रम- क्या आपको शहद पसंद है? अगली बार जब आप शहद खाएँ, तो सोचिएगा कि उसे बनाने में कितनी मेहनत लगी है। एक चम्मच शहद बनाने के लिए, मधुमक्खी को कम से कम 4000 फूलों से रस चूसना पड़ता है, यह 90,000 मील की यात्रा के बराबर है, जो पृथ्वी के दो बार चक्कर लगाने जितनी दूरी है!

चींटियों की ताकत का रहस्य- क्या आप जानते हैं कि एक छोटी-सी चींटी अपने वज़न से 50 गुना ज्यादा वज़न उठा सकती है? अगर आप इसानों में इसकी कल्पना करें, तो इसका मतलब होगा कि एक बच्चा एक बड़ी कार को उठा रहा है।

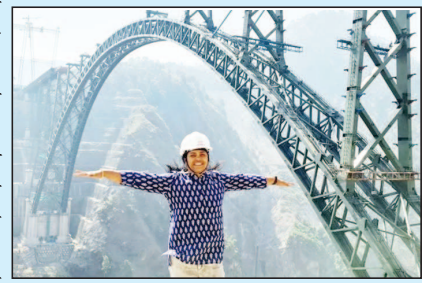
## प्रेरक प्रसंग

### चेनाब ब्रिज : एक सपने का साकार होना और माधवी लता का योगदान

जब चेनाब ब्रिज पर ट्रेन 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ी, तो यह केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं थी, बल्कि एक ऐतिहासिक सपने का पूरा होना था। इस शानदार पल के पीछे एक नाम जो चमकता है, वह है माधवी लता—एक ऐसी इंजीनियर, जिन्होंने अपने 17 सालों के अथक प्रयास से इस असंभव-से लगने वाले कार्य को मूर्त रूप दिया। भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) बंगलुरु में रॉक मैकेनिक्स की विशेषज्ञ और सिविल इंजीनियरिंग विभाग की प्रोफेसर, माधवी लता ने चेनाब

भूगर्भीय अनिश्चतताओं जैसे टूटे चट्टानों और छिपी खाइयों का सामना करने के लिए त्वरित समाधान की जरूरत थी।

तकनीकी चमत्कार- चेनाब ब्रिज की खासियत- चेनाब ब्रिज, जो उधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल लिंक का हिस्सा है, 359 मीटर की ऊँचाई पर खड़ा है, जो एफिल टावर से 35 मीटर ऊँचा है। इसकी बनावट में 28,660 टन स्टील और 66,000 क्यूबिक मीटर कंक्रीट का उपयोग हुआ, जो चार एफिल टावरों के बराबर है। भारी मशीनरी को लाने के लिए 26 किलोमीटर



ब्रिज परियोजना की जटिलताओं को सुलझाकर इसे विश्व का सबसे ऊँचा रेलवे आर्च ब्रिज बनाया। माधवी लता का सफर शुरू हुआ एनआईटी वारंगल से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई और आईआईटी मद्रास से पीएचडी के साथ, 2005 में अफकॉन द्वारा परियोजना सलाहकार के रूप में उनकी नियुक्ति ने उन्हें एक ऐसे मिशन से जोड़ा, जो उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। चेनाब नदी की खड़ी घाटियों और भूकंपप्रवण क्षेत्र में, जहाँ हर पल नई चुनौतियाँ पैदा होती थीं, उन्होंने डिजाइन-एज़-यू-गो (निर्माण के साथ डिजाइन) का अनोखा दृष्टिकोण अपनाया। यह दृष्टिकोण परियोजना की सफलता का आधार बना, क्योंकि

सड़कें बनाई गईं, यह पुल 120 साल तक चलने और 260 किमी प्रति घंटे की हवा का सामना करने में सक्षम है। सबसे रोचक बात यह है कि अगर इसके आठ खंभों में से एक खराब हो जाए, तो भी यह 30 किमी प्रति घंटे की गति से काम कर सकता है। माधवी लता की अगुआई में उनकी टीम ने पारंपरिक कोड से हटकर नवाचार के रास्ते अपनाए, जो इस संरचना को अनूठा बनाता है। एक साधारण व्यक्ति परियोजना के पूरा होने पर माधवी लता का कहना है, यह मेरे लिए देश की एक सफल परियोजना है, जिसमें मैंने योगदान दिया। उनकी विनम्रता और समर्पण उन्हें एक सच्चे राष्ट्रायक बनाता है।

## बूझो तो जानें

■ वह क्या है जो तुम्हारा है पर उसे तुमसे ज्यादा दूसरे लोग इस्तेमाल करते हैं? **जवाब- तुम्हारा नाम**  
■ क्या है जो हमेशा बढ़ती रहती है और कभी कम नहीं होती? **जवाब-उम्र**

■ वह क्या है, जो खरीदो तो काला, इस्तेमाल करो तो लाल और फेंको तो सफेद होता है? **जवाब- कोयला**

■ प्रथम कटे तो दर हो जाऊँ, अंत कटे तो बंद हो जाऊँ, केला मिले तो खाता जाऊँ, बताओ मैं हूँ कौन? **जवाब-बंदर**

■ दो सुंदर लड़के, दोनों एक रंग के, एक बिछड़ जाए तो दूसरा काम न आए। **जवाब-जूते**

■ एक थाल मोतियों भरा, सबके सिर पर उल्टा धरा, चारों ओर फिर वो थाल, मोती उससे एक न गिरे। **जवाब- आकाश और तारे**

■ गोल है पर गंद नहीं, पूँछ है पर पशु नहीं, पूँछ पकड़कर खेलें बच्चे, फिर भी मेरे आँसू न निकले। **जवाब- गुब्बारा**

## हंसी-टिठोली

■ सिपाही - चल भाई, तेरी फांसी का समय हो गया। कैदी - पर मुझे तो फांसी 10 दिन बाद होने वाली थी? सिपाही - जेलर साहब कह कर गए हैं कि तू उनके गांव का है, इसीलिए तेरा काम पहले.

■ बंटी - बेटा दो बिस्तर क्यों बिछाए हैं. बेटा - घर पर दो मेहमान आने वाले हैं. बंटी- कौन-कौन? बेटा - मम्मी के भाई और मेरे मामा. बंटी फिर एक और लगा, मेरा साला भी आ रहा है.

■ टीचर- तुम देर से क्यों आए? बच्चा- सड़क पर लगे बोर्ड के कारण. टीचर- कैसे बोर्ड के कारण? बच्चा- जिस पर लिखा है, आगे स्कूल है, कृपया धीरे चलें.

■ टीचर- एक औरत एक घंटे में 50 रोटी बनाती है, तो तीन औरतें एक घंटे में कितनी रोटी बनाएंगी? बच्चा- एक भी नहीं! टीचर- ऐसा क्यों? बच्चा- वो अकेली हैं इसलिए काम कर रही हैं. तीनों मिलकर सिर्फ बातें करेंगी.

बच्चों अपनी कहानियाँ, कविताएँ, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएँ आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.